

मृदा परीक्षण आधारित उर्वरक उपयोग से घटेगी किसानों की लागत, सुरक्षित रहेगी मिट्टी और पर्यावरण

रोमी गांव, पदमा प्रखंड (हजारीबाग), 22 मई: *"मेरा गाँव मेरा गौरव"* कार्यक्रम के अंतर्गत ICAR-Indian Agricultural Research Institute, झारखंड के वैज्ञानिकों द्वारा हजारीबाग जिले के पदमा प्रखंड के रोमी गांव में किसानों के लिए संतुलित एवं मृदा परीक्षण आधारित उर्वरक उपयोग पर एक विशेष जागरूकता अभियान आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में रोमी एवं सूरजपुरा गांव के किसानों ने सक्रिय रूप से भाग लिया। अभियान का उद्देश्य किसानों को वैज्ञानिक पोषक तत्व प्रबंधन, खेती की लागत में कमी तथा मिट्टी एवं पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक करना था।

कार्यक्रम का आयोजन आईसीएआर–आईएआरआई के निदेशक डॉ. श्रीनिवास राव के निर्देशन में किया गया। *"मठ दर्शन"* की जिम्मेदारी डॉ. एस. के. महंता, कैंपस इंचार्ज और एमजीएमजी के नोडल अधिकारी डॉ. बी एन मंडल द्वारा निभाई गई, जबकि कार्यक्रम का समन्वयन आयोजन अध्यक्ष डॉ. दीपक गुप्ता ने किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में आयोजन समिति के सदस्य डॉ. शिल्पी, डॉ. नरेंद्र, डॉ. आकाश एवं डॉ. सोमा शेखर की सक्रिय भूमिका रही। कार्यक्रम में प्रखंड विकास पदाधिकारी श्री राहुल भी उपस्थित रहे।

किसानों को संबोधित करते हुए डॉ. दीपक गुप्ता ने कहा कि मृदा परीक्षण के आधार पर उर्वरकों का उपयोग करने से अनावश्यक खाद के प्रयोग में कमी आती है, जिससे खेती की लागत घटती है तथा मिट्टी की उर्वरता लंबे समय तक बनी रहती है। उन्होंने बताया कि संतुलित उर्वरक उपयोग से न केवल फसल उत्पादन में वृद्धि होती है, बल्कि पर्यावरण संरक्षण में भी महत्वपूर्ण योगदान मिलता है। उन्होंने किसानों को रासायनिक उर्वरकों पर अत्यधिक निर्भरता कम करने तथा गोबर की खाद (FYM), वर्मीकम्पोस्ट, हरी खाद एवं जीवामृत जैसे जैविक विकल्प अपनाने की सलाह दी।

कार्यक्रम के दौरान डॉ. शिल्पी ने पशुधन स्वास्थ्य प्रबंधन से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी दी। उन्होंने पशुओं में होने वाली सामान्य बीमारियों, उनके बचाव के उपाय तथा समय पर टीकाकरण के महत्व पर विस्तार से चर्चा की। वहीं, डॉ. नरेंद्र ने किसानों को आम की वैज्ञानिक बागवानी एवं बगीचा प्रबंधन की उन्नत तकनीकों की जानकारी दी, जिससे किसान बागवानी से अधिक उत्पादन एवं बेहतर आय प्राप्त कर सकें।

डॉ. आकाश ने किसानों को बेहतर फसल स्वास्थ्य एवं अधिक उत्पादन के लिए बीज उपचार के महत्व के बारे में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि उचित बीज उपचार से फसलों को प्रारंभिक अवस्था में बीज जनित रोगों एवं कीटों से सुरक्षा मिलती है, जिससे अंकुरण बेहतर होता है तथा पौधों की स्वस्थ वृद्धि सुनिश्चित होती है। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में किसानों, ग्रामीणों एवं महिला प्रतिभागियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। किसानों ने वैज्ञानिकों के साथ फसल पोषण, टिकाऊ कृषि, पशुपालन एवं बागवानी से संबंधित विभिन्न विषयों पर चर्चा की।

आईसीएआर-आईएआरआई, झारखंड द्वारा आयोजित यह जागरूकता अभियान क्षेत्र में संतुलित उर्वरक उपयोग, टिकाऊ कृषि एवं वैज्ञानिक खेती को बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल माना जा रहा है।